www.jainworld.com

{ ओघपमत्तादिरासीदो सामाइय-छेदोवट्ठावणसुध्दिसंजदपमत्ताओ समाणा त्ति एदेसि परुवणा ओघं भवदि । ण च सामाइय-छेदोवट्ठावणसुध्दिसंजदेहितो पुधभूदा परिहारसुध्दिसंजवा अत्थि, जेण तदो भेदो होज्ज। किमिदि पुधभूदा णत्थि ? दुणयवदिरितछदुमत्थजीवाभावादो । सेसं सुगमं।

परिहारसुध्दिसंजदेसु पमत्त-अप्पमत्तसंजदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ।।६१।।

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परुविदो त्ति संपहि ण वुच्चदे। णवरि पमतसंजदे तेजाहारं णत्थि।

सुहुमसांपराइयसुध्दिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुध्दिसंजदउवसमा खवगा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ।।६२।। }

< ओघमें कही गई प्रमत्तसंयतादिराशिसे सामायिक और छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयमवाले प्रमत्तसंयतादिक समान है, इसलियए इनके क्षेत्रकी प्ररुपणा ओघोक्त क्षेत्रके समान बन जाती है और सामायिक तथा छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयतोंसे परिहारविशुध्दिसंयत पृथक नही है, जिससे कि उनसे इनमें भेद हो जाय ।

शंका - परिहारविशुध्दिसंयत, सामायिक और छेदोपस्थापनाशुध्दिसंयतोसे पृथग्भूत क्यों नही है?

समाधान- क्योंकि, द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक इन दोनो नयोसे भिन्न छद्मस्थ जीवोंका अभाव है।

शेष सूत्रका अर्थ सुगम है।

परिहारविशुध्दिसंयतोमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव कितने क्षेत्रमें रहते है? लोकके असंख्यातवें भागमे रहते है ।।६१।।

इस सूत्रका भी अर्थ पहले कहा जा चुका है, इसलिए अब नही कहते है। विशेष बात यह है कि प्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती परिहारविशुध्दिसंयतके तैजससमुध्दात और आहारकसमुध्दात ये दो पद नही होते है।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयतोमें सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयत उपशमक और क्षपक जीव कितने क्षेत्रमें रहते है? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते है ।।६२।। >

{ १. प्रतिषु दुण्णय इति पाठ : ।

२. X X X परिहारविशुध्दिसंयतानां प्रमत्ताप्रमत्तानां X X X सामान्योक्तं क्षेत्रम् । स.सि. १,८.

३. X X X सूक्ष्मसाम्परायशुध्दिसंयतानां X X X सामान्योक्तं क्षेत्रम् । स. सि. १,८. }

{ सुहुमसांपराइयसुध्दिसंजदेसु त्ति आधारणिद्देसो। तत्थ सुहुमसांपराइयसुध्दिसंजदा दुविधा होंति उवसामगा खवगा चेदि । ते अप्पणो पदेसु वट्टमाणा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे होंति। णवरि मारणंतियपदे माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे होंति।

जहाक्खादविहारसुध्दिसंजदेसु चदुट्ठाणी ओघं ।।६३।।

एत्थ ट्ठाणसद्दो पुव्वुत्तणाएण गुणट्ठाणवाची। चदुण्हं ठाणांणं समाहारो चदुट्ठाणी सा ओघं होदि। उवसंतकसाय-खीणकसाय-सजोगि-अजोगिजिणाणं जहाक्खादविहारसुध्दिसंजदाणं अप्पणो ओघपरुवणं होदि त्ति जं वुत्तं होदि।

संजदासंजदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभादे ।।६४।।

एदस्स अत्थो पुव्वं परुविदो ।

असंजदेसु मिच्छादिट्ठी ओघं ।।६५।। }

< 'सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयतोमें' इस पदसे आधारका निर्देश किया गया। इस गुणस्थानमें सूक्ष्मसाम्परायिकशुध्दिसंयत दो प्रकारके होते है, उपशामक और क्षपक। वे दोनो ही प्रकारके सूक्ष्मसाम्परायिकसंयत अपने यथासंभव पदोमें रहते हुए सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवे भागमे और मानुषक्षेत्रके संख्यातवें भागमें रहते है। विशेष बात यह है कि मारणान्तिकसमुध्दातपदमें उपशामक जीव मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है।

यथाख्यातविहारशुध्दिसंयतोमें उपशान्तकषाय गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक चारो गुणस्थानवाले संयतोंका क्षेत्र ओघके समान है ।।६३।।

इस सूत्रमे आया हुआ स्थान शब्द पूर्वोक्त न्यायसे गुणस्थानका वाचक है। चार गुणस्थानके समुदायको चतु:स्थानी कहते है। उनका क्षेत्र ओघके समान है। अर्थात उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, सयोगिजिन और अयोगिजिन गुणस्थानवर्ती यथाख्यात विहारविशुध्दिसंयतोंका क्षेत्र अपने ओघक्षेत्रके समान होता है, ऐसा अर्थ कहा गया समझना चाहिए।

संयतासंयत जीव कितने क्षेत्रमें रहते है? लोकके असंख्यातवे भागमें रहते है ।।६४।।

इस सूत्रका अर्थ पहले कहा जा चुका है।

असंयतोमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघके समान सर्व लोकमें रहते है ।।६५।। >

{ १. X X X यथाख्यातविहारशुध्दिसंयतानां चतुण्णा X X सामान्योक्तं क्षेत्रम् । स. सि १, ८.

२. X X X संयतासंयतानां X X सामान्योक्तं क्षेत्रम् । सं. सि, १,८.

३. X X असंयतानां च चतुर्णां सामान्योक्तं क्षेत्रम् । स.सि.१ ,८. }

{ ओघपरुवणा गुणट्ठाणाणमभेदेण भेदेण च जा कदा, सा अत्थोध-आदेसोघेहि दुविधा होदि। आदेसोघो वि गुणट्ठाण भेदेण चोद्दसविहो होदि। एत्थ ओघमिदि वुत्ते कदमस्स ओघस्स गहणं? आदेसोघस्स अवयवभूदमिच्छादिट्ठीणमोघस्स । कधमेदं लब्भदे? पच्चासत्तीदो। अण्णेहि वि ओघेहि सह कथंचि पच्चासत्ती अत्थि त्ति भणिदे ण, अण्णेहि सह मिच्छादिट्ठीहि जेम पयरिसेण पच्चासत्तीए अभावादो। एदमत्थपदं सव्वत्थ जोजेयव्वं। असंजदचदुगुणट्ठाणाणमेगजोगो किण्ण कदो ? ण, मिच्छादिट्ठीणं सेसगुणट्ठाणेहि सह खेत्तेण पयरिसपच्चासत्तीए अभावादो।

सासणसम्मादिट्ठि सम्मामिच्छादिट्ठि असंजदसम्मादिट्ठि ओघं ।।६६।।

एदेसिं तिण्हं गुणट्ठाणाणं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तणेण माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणतणेण च पच्चासत्ती अत्थि त्ति एगजोगो कदो।

एवं संजममग्गणा समत्ता । }

< शंका - ओघप्ररुपणा गुणस्थानोंके अभेदसे और भेदसे जो की गई है, वह अर्थ - ओघ और आदेश-ओघके भेदसे दो प्रकारकी होती है। आदेश-ओघ भी गुणस्थानोंके भेदसे चौदह प्रकारका होता है। सो यहां ओघ ऐसा सामान्यपद कहनेपर किस ओघका ग्रहण किया गया है?

समाधान - आदेश-ओघके अवयवभूत मिथ्यादृष्टियोंके ओघका ग्रहण किया गया है, यह जाना जाता है।

शंका - यह अर्थ कैसे प्राप्त होता है ?

समाधान - प्रत्यासत्तिसे ,अर्थात् सामीप्यसे, आदेश-ओघका ग्रहण किया गया है, यह जाना जाता है।

शंका - प्रत्यासत्ति तो कथंचित अन्य भी ओघोंके साथ हो सकती है?

समाधान - ऐसी शंकापर उत्तर देते है कि नही, क्योंकि, अन्य ओघोंके साथ मिथ्यादृष्टियोंके समान प्रकर्षतासे प्रत्यासत्तिका अभाव है।

यह अर्थपद सर्वत्र लगाना चाहिए।

शंका - असंयत चारों गुणस्थानोकां एक योग (समास) क्यों नही किया?

समाधान - नही, क्योंकि, मिथ्यादृष्टियोंका शेष सासादनसम्यग्दृष्टि जीव ओघके समान लोकके असंख्यातवे भागमें रहते है ।।६६।।

इन सूत्रोक्त तीनों ही गुणस्थानोका सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवे भागके साथ और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रके साथ प्रत्यासत्ति पाई जाती है, इसलिये उक्त तीनों गुणस्थानोंका एक योग इस सूत्रमें किया गया है।

इस प्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई। >

{ दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते लोगस्स असंखेज्जदिभागे ।।६७।।

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्धादगदा चक्खु-दंसणी मिच्छादिट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। एत्थ ओवट्टणा जाणिय कादव्वा। एवं मारणंतियसमुग्धादगदा। णवरि तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे त्ति वतव्वं। एवं चेव उववादगदाणं पि वत्तव्वं। अपज्जतकाले चक्खुदंसणाभावादो उववादो णत्थि त्ति णासंकणिज्ज् अपज्जत्तकाले वि खओवसमं पडुच्च चक्खुदंसणुवलंभादो। जदि एवं, तो लध्दिअपज्जत्ताणं पि चक्खुदंसणित्तं पसज्जदे। तं च णत्थि चक्खुदंसणिअवहारकालस्स पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेतपमाणप्पसंगादो? ण एस दोसो, णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं चक्खुदंसणमत्थि, उत्तरकाले णिच्छएण चक्खुदंसणोवजोगसमुप्पत्तीए }

< दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनियोमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते है? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते है ।।६७।।

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुध्दात, कषायसमुध्दात और वैक्रियिकसमुध्दातगत चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवे भागमे तिर्यग्लोकसे संख्यातवे भागमें और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है। यहांपर अपवर्तना जानकर करना चाहिए । इसी प्रकार मारणान्तिकसमुध्दातगत मिथ्यादृष्टि चक्षुदर्शनियोंका क्षेत्र है। विशेष बात यह है कि मारणान्तिकसमुध्दातगत चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव तिर्यग्लोकके असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है, ऐसा कहना चाहिए। इसी प्रकारसे उपपादगत मिथ्यादृष्टि चक्षुदर्शनियोंका भी क्षेत्र कहना चाहिए। अपर्याप्तकालमें चक्षुदर्शनका अभाव होनेसे यहांपर उपपादपद नही है, ऐसी आशंका नही करनी चाहिए, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें भी क्षयोपशमकी अपेक्षा चक्षुदर्शन पाया जाता है।

शंका - यदि ऐसा है, तो लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके भी चक्षुदर्शनीपनेका प्रसंग प्राप्त होता है। किन्तु लब्धपर्याप्त जीवोंके चक्षुदर्शन होता नही है। यदि लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके भी चक्षुदर्शनका सद्भाव माना जायगा, तो चक्षुदर्शनी जीवोंके अवहारकाल प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होगा?

समाधान - यह कोई दोष नही है, क्योंकि, निर्वृत्यपर्याप्त जीवोंके चक्षुदर्शन होता है, इसका कारण यह है कि उत्तरकालमें, अर्थात अपर्याप्तकाल समाप्त होनेके पश्चात निश्चयसे >

{ १. दर्शनानुवादेन चक्षुदर्शनिनां मिथ्यादृष्टयादिक्षीणकषायान्तानां लोकस्यासंख्येयभाग : । स. सि. १,८.३. }

{ अविणाभाविचक्खुदंसणखओवसमदंसणादो। चउरिदियं-पंचिदियलध्दिअपज्जत्ताणं चक्खुदंसणं णत्थि, तत्थ चक्खुदंसणोवओगसमुप्पत्तीए अविणाभाविचक्खुदंसणक्खओवसमाभावादो। सेसगुणट्ठाणाणं पज्जवट्ठियपरुवणा जाणिय वतव्वा।

अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठि ओघं ।।६८।।

सुगममेदं सुत्तं ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ।।६९।।

एदेसिमणंतरदोसुत्ताणमेगत्तं किण्ण कदं? ण, मिच्छादिट्ठीहि सेसगुणट्ठाणाणं पच्चासत्तीए अभावादो।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ।।७०।।

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ।।७१।। }

< चक्षुदर्शनोपयोगकी समुत्पत्तिका अविनाभावी चक्षुदर्शनका क्षयोपशम देखा जाता है। हां, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके चक्षुदर्शन नही होता है, क्योंकि, उनमें चक्षुदर्शनोपयोगकी समुत्पत्तिका अविनाभावी चक्षुदर्शनावरण कर्मके क्षयोपशमका अभाव है।

इसी प्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि आदि शेष गुणस्थानोंकी पर्यायार्थिकनयसम्बन्धी प्ररुपणा जान करके कहनी चाहिए।

अचक्षुदर्शनियोमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघके समान सर्वलोकमे रहते है ।।६८।।

यह सूत्र सुगम है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती अचक्षुदर्शनी जीव ओघके समान लोकके असंख्यातवें भागमें रहते है।।६९।।

शंका - इन अनन्तरोक्त दोनों सूत्रोंका एकसूत्र क्यों नही बनाया ?

समाधान - नही, क्योंकि क्षेत्रकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि अचक्षुदर्शनी जीवोंके साथ शेष गुणस्थानवर्ती अचक्षुदर्शनी जीवोंकी प्रत्यासत्तिका अभाव है।

अवधिदर्शनी जीवोंका क्षेत्र अवधिज्ञानियोंके क्षेत्रके समान लोकका असंख्यातवां भाग है ।।७०।। केवलदर्शनी जीवोंका क्षेत्र केवलज्ञानियोंके क्षेत्रके समान लोकका असंख्यातवां भाग, लोकका असंख्यात बहुभाग और सर्वलोक है ।।७१।। >

{ १. अचक्षुदर्शनिनां मिथ्यादृष्ट्यादिक्षीणकषायान्तानां सामान्योक्तं क्षेत्रम् । स.सि.१,८.

२. अवधिदर्शनिनामवधिज्ञानिवत् । स.सि.१,८.

३. केवलदर्शनिनां केवलज्ञानिवत्। स.सि.१,८. }

{ एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि त्ति पज्जवट्ठियपरुवणा ण कीरदे ।

एवं दंसणमग्गणा समत्ता ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठि ओघं [१]।। ७२।।

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपदेहि सव्वलोगच्छणेण,. विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे खेत्ते अच्छणेण च सरिसत्तमत्थि त्ति ओघमिदि भणिद। णवरि वेउव्वियसमुग्धादगदा तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागे ।

सासणसम्मादिट्ठि सम्मामिच्छादिट्ठि असंजदसम्मादिट्ठि ओघं ।।७३।।

चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तणेण माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणत्तणेण च सरिसत्तुवलंभादो सिध्दमोघत्तं। विसेसदो पुण मारणंतिय-उववादगदा किण्ह-णील- }

< ये दोनों ही सूत्र सुगम है, इसलिये पर्यायार्थिकनयकी प्ररुपणा नही की जाती है।

इस प्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले जीवोमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघके समान सर्वलोकमें रहते है ।।७२।।

स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुध्दात, कषायसमुध्दात, मारणान्तिकसमुध्दात और उपपाद, इन पदोंके साथ सर्वलोकमें रहनेकी अपेक्षा, विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिकपदके साथ सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें तिर्यग्लोकके संख्यातवे भागमें और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमे रहनेकी अपेक्षा तीनों अशुभ लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके क्षेत्रकी ओघके साथ सदृशता है, इसलिए सूत्रमें ओघ यह पद कहा। विशेष बात यह है कि वैक्रियिकसमुध्दातगत तीनों अशुभलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीव तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागमे रहते है।

तीनो अशुभलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीव ओघके समान लोकके असंख्यातवे भागमें रहते है ।।७३।।

तीनो अशुभलेश्यावाले उक्त तीनों गुणस्थानवर्ती जीवोंके स्वसंभव पदोंकी अपेक्षा सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागमें रहनेसे और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहनेसे ओघके साथ सदृशता पाई जाती है, इसलिए उनके क्षेत्रके ओघपना सिध्द हुआ। >

{ १ लेश्या नुवादेन कृष्णनीलकापोतलेश्यांना मिथ्यादृष्टयाद्यसंयतसम्यग्दृष्टयन्तानां सामान्योवतं क्षेत्रम ।स.सि. १,८. }

{ काउलेस्सियअसंजदसम्मादिट्ठिणो संखेज्जा वि होदूण माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे खेत्तेअच्छंति, असंखेज्जजोयणायामत्तादो ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्त संजदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ।।७४।।

तेउलेस्सियमिच्छादिट्ठी सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्धादगदा तिण्हं लोगणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्गुणे अच्छंति। मारणंतियसमुग्धादगदा एवं चेव। णवरि तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे त्ति वत्तव्वं। एवं चेव उववादगदाणं। एत्थ ओवट्टणं ठविज्जमाणे सुधम्मरासि ठविय अप्पणो उवक्कमणकालेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे एगसमएण तत्थुववज्जमाणजीवा होंति। पुणो अवरमेगं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं भागहारसरुवेण ड्डविदे रज्जुआयामेण उववादगदरासी होदि। पुणो संखेज्जपदरंगुलमेत्तरज्जूहि गुणिदे उववादखेत्तं होदि। ओवड्डणा जाणिय कायव्वा। तेउलेस्सियगुणपडिवण्णाणं ओघभंगो। पम्मलेस्सियमिच्छादिट्ठी }

< किन्तु विशेष बात यह है कि मारणान्तिकसमुध्दात और उपपाद पदगत कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि संख्यात हो करके भी मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है, क्योंकि, उनके मारणान्तिकसमुध्दात और उपपाद पदगत दंडका आयाम असंख्यात योजन पाया जाता है।

तेजोलेश्यावाले और पद्मलेश्यावाले जीवोमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते है?

लोकके असंख्यातवें भागमें रहते है ।।७४।।

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुध्दात, कषायसमुध्दात और वैक्रियिकसमुध्दतगत तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवे भागमें, तिर्यग्लोकके संख्यातवे भागमें और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है। मारणान्तिकसमुध्दातगत तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र भी इसी प्रकार है। विशेष बात यह कहना चाहिए कि वे् तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है। इसी प्रकार उपपाद पदगत तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र जानना चाहिए। यहांपर अपवर्तनाके स्थापित करते समय सौधर्मकल्पकी जीवराशिको स्थापित कर उसमें उत्पन्न

होनेवाले जीव होते है। पुन: एक दूसरा पल्योपमका असंख्यातवां भाग भागहारस्वरुपसे स्थापित कर एक राजुप्रमाण >

{ १ तेज:पद्मलेश्यानां मिथ्यादृष्टयाद्यप्रमतान्तानां लोकस्यासंखेयभाग : । स. सि. १, ८. }

{ सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसायसमुग्धादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति, पहाणीभूदतिरिक्खरासित्तादो। वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगदा चदुण्हं लोगाणम-संखेज्जदिभागे अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे, पधाणीकदसणक्कुमार-माहिंदरासीदो। सासणादिगुणपडिवण्णाणं अप्पमत्तसंजदंताणं ओघभंगो ।

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग छदुमत्था केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ।।७५।।

सुक्कलेस्सियमिच्छाइट्ठिणो जेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता, तेण सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपदेहि }

< आयमवाली उपपादपदको प्राप्त जीवराशिका प्रमाण होता है। पुन: उसे संख्यात प्रतारांगुलप्रमाण राजुओंसे गुणित करनेपर उपपादक्षेत्रका प्रमाण होता है। यहांपर अपवर्तना जान करके करना चाहिए। गुणस्थानप्रतिपन्न तेजोलेश्यावले जीवोंका क्षेत्र ओघक्षेत्रके समान है।

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुध्दात और कषायसमुध्दातगत पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें तिर्यग्लोक संख्यातवे भागमें और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है, क्योंकि, यहांपर तिर्यचराशिकी प्रधानता है। वैक्रियिकसमुध्दात, मारणान्तिकसमुध्दात और उपपादपदको प्राप्त पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवे भागमें और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है, क्योंकि, यहांपर सानत्कुमार-माहेन्द्र देवराशिकी प्रधानता है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पद्मलेश्यावाले जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है।

शुक्ललेश्यावाले जीवोंमे मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतराछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती शुक्ललेश्यावाले जीव कितने क्षेत्रमें रहते है? लोकके असंख्यातवे भागमे रहते है।।७५।।

चूंकि, शुक्लेलश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिये वे स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुध्दात, कषायसमुध्दात, वैक्रियिकसमुध्दात, मारणान्तिकसमुध्दात और उपपादपदकी अपेक्षा समान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागमें और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदि शेष गुणस्थानवर्ती शुक्लेलेश्यावाले जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है। विशेष बात यह है कि >

{ १.शुक्ललेश्यानां मिथ्यादृष्टयादिक्षीणकषायान्तानां लोकस्यासंख्येयभाग : । स. सि. १, ८.

}

{ चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। सेसगुमट्ठाणाणमोघभंगो। णवरि मिच्छादिट्ठिप्पहुडि सव्वगुणट्ठाणेसु मारणंतिय-उववादपदेसु जीवा संखेज्जा चेव।

सजोगिकेवली ओघं ।।७६।।

एदं सुत्तं सुगमं। जधा कसायमग्गणाए अकसाइया वुत्ता, तधा एत्थ लेस्सामग्गणाए अलेस्सिया किण्ण वुत्ता त्ति भणिदे वुच्चदे-जत्थ दव्वं पहाणीभूदं तत्थ भणिदं होदि। जत्थ पुण पज्जवो पहाणो, तत्थ ण होदि। लेस्सामग्गणा पुण पज्जयपहाणा एत्थ कदा, तेण अलेस्सिया ण परुविदा।

एवं लेस्सामग्गणा समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिध्दिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं ।।७७।।

एदं सुत्तं सव्वं पि मूलोघादो अविसिट्ठमिदि मूलोघपज्जवट्ठियपरुवणं लभदे । }

< मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक सभी गुणस्थानोमें मारणान्तिकसमुध्दात और उपपाद, इन दोनों पदोमें शुक्कललेश्यावाले जीव संख्यात ही होते है।

शुक्ललेश्यावाले सयोगिकेवलीका क्षेत्र ओघके समान है ।।७६।।

यहा सूत्र सुगम है।

शंका - जिस प्रकार कषायमार्गणामें क्षेत्रप्ररुपणा करते समय अकषायी जीव कहे गये है उसी प्रकार यहां लेश्यामार्गणामें अलेश्य जीवोंका कथन क्यों नही किया गया है?

समाधान - ऐसी आशंका करनेपर कहते है, जिस मार्गणामें द्रव्य प्रधान है उस मार्गणामें तो वैसा कहा गया है, किन्तु जिस मार्गणामें पर्याय प्रधान है उस मार्गणामें वैसा नही कहा गया है परन्तु लेश्यामार्गणा यहां पर्यायप्रधान कही गई है, इसलिए इस मार्गणामें अलेश्य जीव नही कहे गये है।

इस प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिध्दिक जीवोंमे मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका क्षेत्र ओघक्षेत्रके समान है ।।७७।।

यह सम्पूर्ण ही सूत्र मूल ओघ प्ररुपणाके समान है, इसलिए मूल-ओघ-पर्यायार्थिकनयकी प्ररुपणाको प्राप्त होता है, अर्थात भव्यजीवोंका क्षेत्र ओघमें कहे गये क्षेत्रके समान ही है। >

{ १.सयोगकेवलिनामलेश्यानां च सामान्योक्तं क्षेत्रम् । स. सि. १, ८.

२.भव्यानुवादेन भव्यांना चतुर्दशानां सामान्योक्तं क्षेत्रम् । स.सि १,८. }

{ अभवसिध्दिएसु मिच्छादिट्ठी केवडि खेत्ते, सव्वलोए ।।७८।।

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा अभवसिध्दिया सव्वलोगे। विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदट्टिदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। कुदो? तसरासिमस्सिदूण वुत्तबंधप्पाबहुगसुत्तादो णज्जदे । तं जधासव्वत्थोवा धुवबंधगा। सादियबंधगा असंखेज्जगुणा। अणादियबंधगा असंखेज्जगुणा। अध्दुवबंधगा विसेसाहिया। केत्तियमेतेण ? धुवबंधगेणूणसादियबंधगमेत्तेण । तसेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव अभवसिध्दिया होंति त्ति एदं कुदो णव्वदे ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसादियबंधगेहितो असंखेज्जगुणहीणत्तण्णहाणुव-वत्तीदो। सादियबंधगा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता त्ति कुदो णव्वदे ? }

< अभव्यसिध्दिक जीवोमें मिथ्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते है? सर्व लोकमें रहते है ।।७८।।

स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुध्दात, कषायसमुध्दात, मारणान्तिकसमुध्दात और उपपाद पदको प्राप्त अभव्यसिध्दिक जीव सर्व लोकमें रहते है। विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिक पदस्थित अभव्यसिध्दिक जीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवे भागमें और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है।

शंका - यह कैसे जाना कि विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिकसमुध्दातगत अभव्यजीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवे भागमें और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है?

समाधान - त्रसराशिका आश्रय करके कहे गये बंधसम्बन्धी अल्पबहुत्वानुयोगद्वारके सूत्रोंसे यह जाना जाता है। वह इस प्रकार है- ध्रुवबंधक जीव सबसे कम है। उनसे सादिबंधक जीव असंख्यातगुणे है। उनसे अनादिबंधक जीव असंख्यातगुणे है। उनसे अध्रुवबंधक जीव विशेष अधिक है। कितने मात्र विशेषसे अधिक है? ध्रुवबंधकोंसे हीन सादिबंधकोंकी राशिके प्रमाणसे अधिक है।

शंका - त्रसजीवोंमे पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र ही अभव्यसिध्दिक जीव होते है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान - पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र सादिबंधकोसें ध्रुवबंधकोंकी असंख्यातगुणहीनता अन्यथा बन नही सकती है, इस अन्यथानुपपत्तिसे जाना जाता है कि त्रसराशिमें अभव्यसिध्दिक जीव पल्योपमके असंख्यातवे भागमात्र ही होते है।

शंका - सादिबंध करनेवाले जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र होते है, यह कैसे जाना?

समाधान- युक्तिसे । >

{ १.अभव्यानां सर्वेलोक:। स.सि १,८. }

{ जुत्तीदो। का जुत्ती ? वुच्चदे-तसेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता सादियबंधगा, वसापुधत्तंतरेण तसट्ठिदीए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालुवलंभादो। एइंदिएसु संचिदअणंतसादियबंधगेहितो पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता सादियबंधगा तसेसु किण्ण उप्पज्जंती ? ण, सव्वगुण-मग्गणट्ठाणेसु आयाणुसारिवओवलंभादो। जेण एइंदिएसु आओ संखेज्जो, तेण तेसि वएण वि तत्तिएण चेव होदव्वं। तदो सिध्दं सादियबंधगा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता त्ति ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठि-खइयसम्मादिट्ठीसु असंजद सम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं ।।७९।।

दव्वट्ठियपरुवणं पडि विसेसो णत्थि त्ति ओघमिद वुत्तं। पज्जवट्ठियपरुवणाए वि णत्थि कोई विसेसो । णवरि खईयसम्मादिट्ठीसु संजदासंजदाणं }

< शंका - वह युक्ति कौनसी है?

समाधान - कहते है- त्रसजीवोमें पल्योपमके असंख्यातवे भागमात्र सादिबंधक जीव होते है, क्योंकि, वर्षपृथक्त्वके अन्तरसे त्रसकायकी स्तिथिका पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र उपक्रमणकाल पाया जाता है।

शंका - एकेन्द्रिय जीवोमें संचयको प्राप्त अनन्त सादिकबंधकोमेंसे जगत्प्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण सादिबंधक जीव त्रसजीवोमें क्यों नही उत्पन्न होते है?

समाधान - नही, क्योंकि, सभी गुणस्थान और मार्गणास्थानोमें आयके अनुसार ही व्यय पाया जाता है। चूंकि, एकेन्द्रियोमें आयका प्रमाण संख्यात ही है, इसलिए उनका व्यय भी उतना अर्थात संख्यात ही होना चाहिए। इसलिए सिध्द हुआ कि त्रसराशिमें सादिबंधक जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र ही होते है।

इस प्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है ।।७९।।

द्रव्यार्थिकनयके प्ररुपणकी अपेक्षा सूत्र-प्रतिपादित जीवोंके क्षेत्रमें ओघ क्षेत्रसे कोई विशेषता नही है, इसलिए सूत्रमें ओघ ऐसा पद कहा है। पर्यायार्थिकनयकी प्ररुपणाणें भी कोई विशेषता नही है। केवल क्षायिकसम्यग्दृष्टियोमें संयतासंयत गुणस्थानवर्ती जीवोंके >

{ १. सम्यक्त्वानुवादेन क्षायिकसम्यग्दृष्टीनामसंयतसम्यग्दृष्टयाद्ययोगकेवल्यन्तानां X X X सामान्योक्तं क्षेत्रम् । स. सि. १, ८. }

{ मणुसपज्जत्तसंजदासंजदपरुवणाए कादव्वा । असंजदसम्मादिट्ठी वि मारणंतियउववादपदेसु वट्टमाणा संखेज्जा। सेसं सुगमं।

सजोगिकेवली ओघं ।।८०।।

पुव्विल्लेहि सह खेत्तं पडि पयरिसेण पच्चासत्तीए अभावादो पुध सुत्तारंभो। सेसं सुगमं ।

वेदगसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपमत्तसंजदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ।।८१।।

एत्थ ओघपज्जवट्ठियपरुवणा णिरवयवा सव्वगुणट्ठाणेसु परुवेदव्वा विसेसाभावादो।

उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ।।८२।। }

< मनुष्यपर्याप्त संयतासंयत तक ही होते है, अत: उनमें संभव पदोंकी अपेक्षा ही क्षेत्रप्ररुपणा करना चाहिए। मारणान्तिकसमुध्दात और उपपाद, इन दो पदोमें वर्तमान असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यात ही होते है। शेष सूत्रका अर्थ सुगम है।

सयोगिकेवली भगवानका क्षेत्र ओघकथित क्षेत्रके समान है ।।८०।।

सयोगिकेवली गुणस्थानवर्ती पूर्ववर्ती गुणस्थानोंके साथ क्षेत्रकी अपेक्षा प्रकर्षतासे प्रत्यासत्तिका अभाव है, इसलिए यह पृथक सूत्र बनाया गया है। शेष सूत्रका अर्थ सुगम है।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती वेदकसम्यग्दृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते है?

लोकके असंख्यातवें भागमें रहते है।।८१।।

यहांपर ओघमें कही गई पर्यायार्थिकनयसम्बन्धी क्षेत्रप्ररुपणा सम्पूर्ण पदोंकी अपेक्षा सर्व गुणस्थानोंमे प्ररुपण करना चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नही है ।

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते है? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते है ।।८२।। >

{ १.क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टीनामसंयतसम्यग्दृष्टयाद्यप्रमतान्तानां X X X सामान्योक्तं क्षेत्रम्। स. सि. १.८.

२.औपशमिकसम्यग्दृष्टीनामसंयतसम्यग्दृष्टयाद्युपशान्तकषायान्तानां X X सामान्योक्तं क्षेत्रम्। स.सि.१, ८.

}

{ सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा असंजदसम्मादिट्ठी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। मारणंतिय-उववादपदेसु एसो चेव आलावो। णवरि तेसु पदेसु ट्ठिदजीवा संखेज्जा चेव होंति, उवसमसेढीदो ओदरिय उवसमसम्मतेण सह असंजमं पडिवण्णजीवाणं संखेज्जतुवलंभादो। सेसउवसमसम्मादिट्ठींण किण्ण मरणमत्थि त्ति वुत्ते सभावादो । एवं संजदासंजदाणं पि। णवरि उववादपदं णत्थि । सेसाणमोघं । णवरि पमत्तसंजदस्स उवसमसम्मत्तेण तेजाहारं णत्थि ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ।।८३।।

सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ।।८४।।

मिच्छादिट्ठी ओघं ।।८५।। }

< स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुध्दात, कषायसमुध्दात और वैक्रियिकसमुध्दातको प्राप्त असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागमे और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रम् रहते है। मारणान्तिकसमुध्दात और उपपाद इन दोनों पदोमें भी यही उक्त क्षेत्र-आलाप जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि उन दोनों पदोमें वर्तमान जीव संख्यात ही होते है, क्योंकि, उपशमश्रेणीसे उतर कर उपशमसम्यक्त्वके साथ असंयमभावको प्राप्त होनेवाले जीवोंकी संख्या संख्यात ही पाई जाती है।

शंका - उपशमश्रेणीसे उत्तर कर मरनेवाले उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अतिरिक्त शेष अन्य उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका मरण क्यों नही होता है?

समाधान - स्वभावसे ही नही होता है।

इसी प्रकारसे संयतासंयत गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र भी जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि उनके उपपादपद नही होता है। शेष गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघ-

वर्णित क्षेत्रके समान है। विशेषता केवल इतनी है कि प्रमत्तसंयतके उपशमसम्यक्त्वके साथ तैजसमुध्दात और आहारकसमुध्दात नही होते है।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है ।।८३।।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है ।।८४।।

मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है ।।८५।। >

{ १. प्रतिषु पदेसेसु इति पाठ: ।

२. प्रतिषु हि इति पाठ: ।

३. X X X सासादनसम्यग्दृष्टीनां सम्यग्मिथ्यादृष्टीनां मिथ्यादृष्टीनां च सामान्योक्तं क्षेत्रम् ।

स. सि. १, ८. }

{ एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि त्ति एदेसि परुवणा ण कीरदे ।

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ।।८६।।

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्धादसदा सण्णिमिच्छादिट्ठी तिण्हं लोगणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जुणे अच्छंति । एवं मारणंतिय-उववादपदेसु वि वत्तव्वं। णवरि तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे इदि भणिदव्वं। सेसगुणट्ठाणाणमोघभंगो, तदो विसेसाभावादो।

असण्णी केवडि खेत्ते, सव्वलोगे ।।८७।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता। }

< ये उक्त तीनों ही सूत्र सुगम है, इसलिए उनकी प्ररुपणा नही की जाती है।

इस प्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई।

संज्ञिमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती संज्ञी जीव कितने क्षेत्रमें रहते है? लोकके असंख्यातवें भागमे रहते है ।।८६।।

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुध्दात, कषायसमुध्दात और वैक्रियिकसमुध्दात, इन पांच पदोंको प्राप्त संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें, तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमें और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है। इसी प्रकार मारणान्तिकसमुध्दात और उपपाद, इन दो पदोमें वर्तमान संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंका भी क्षेत्र कहना चाहिए। केवल इतनी बात विशेष कहनी चाहिए कि ये तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है। सासादनादि शेष गुणस्थानवर्ती जीवोंका क्षेत्र ओघ-क्षेत्रके समान है, क्योंकि, ओघके क्षेत्रसे सासादनादि गुणस्थानोंके संज्ञी जीवोंके क्षेत्रमें कोई विशेषता नही है।

असंज्ञी जीव कितने क्षेत्रमें रहते है? सर्व लोकमे रहते है ।।८७।।

इस सूत्रका अर्थ सुगम है।

इस प्रकार संज्ञिमार्गणा समाप्त हुई। >

{ १. संज्ञानुवादेन संज्ञिनां चक्षुर्दर्शनिवत् । स.सि. १,८.

२. असंज्ञिनां सर्वलोक : । स.सि. १,८. }

{ आहारणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ।।८८।।

सव्वपदेहि ओघपरुवणादो विसेसो णत्थि त्ति ओघत्तं जुज्जदे ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ।।८९।।

एदस्स सुत्तस्स पज्जवट्ठियपरुवणा ओघपरुवणाए तुल्ला। णवरि उववादो सरीरगहिदपढमसमए वत्तव्वो। सजोगिकेवलिस्स वि पदर-लोगपूरणसमुग्धादा वि णत्थि, तत्थ आहारित्ताभावादो।

अणाहारएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ।।९०।।

दव्वट्ठियपरुवणाए ओघं होदि। पज्जवट्ठियपरुवणाए पुण उववादपदमेक्कं चेव अत्थि। सेसं णत्थि । सेसं सुगमं। }

< आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमे मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्र ओघके समान सर्व लोक है ।।८८।।

मिथ्यादृष्टि जीवोमें स्वस्थान आदि सभी पदोंके साथ क्षेत्रसम्बन्धी ओघप्ररुपणासे विशेषता नही है, इसलिए उनके क्षेत्रके ओघपना बन जाता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती संज्ञी जीव कितने क्षेत्रमें रहते है? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते है ।।८९।।

इस सूत्रकी पर्यायार्थिकनयसम्बन्धी क्षेत्रप्ररुपणा ओघ क्षेत्रप्ररुपणाके समान है। विशेष बात यह है कि आहारक जीवोंके उपपादपद शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयमें कहना चाहिए, (क्योंकि, तभी जीव आहारक होता है)। आहारक सयोगिकेवलीके भी प्रतर और लोकपूरणसमुध्दात नही होते है, क्योंकि, इन दोनो अवस्थाओमें केवलीके आहारकपनेका अभाव है, अर्थात प्रतर और लोकपूरणसमुध्दातकी अवस्थामें सयोगिकेवली भगवान अनाहारक रहते है।

अनाहारकोमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान सर्वलोक है ।।९०।।

द्रव्यार्थिकनयकी प्ररुपणासे अनाहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान होता है। किन्तु पर्यायार्थिकनयकी प्ररुपणाकी अपेक्षा तो एक उपपादपद ही होता है। शेष पद नही होते है, (क्योंकि, अनाहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंमें स्वस्थानादि शेष सभी पद असंभव है) । शेष सूत्रका अर्थ सुगम है। >

{ १. आहारानुवादेन आहारकाणां मिथ्यादृष्टयादिक्षीणकषायन्तानां सामान्योक्तं क्षेत्रम् । सयोगकेवलिनां लोकस्यासंख्येयभाग : । स. सि. १, ८. }

{ सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी अजोगकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ।।९१।।

पज्जवट्ठियणएण उववादगदा सासणसम्मादिट्ठी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाईज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। असंजदसम्मादिट्ठीणं परुवणा एवं चेव । अजोगिकेवली चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे।

सजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जेसु वा भागेसु, सव्वलोगे वा [२] ।।९२।।

पदरगदो सजोगिकेवली लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु होदि, लोगपेरंतट्ठिदवादवलयवदिरित्तसयललोगखेत्तं समावूरिय ट्ठिदत्तादो। लोगपूरणे पुण सव्वलोगे भवदि, सव्वलोगमावूरिय ट्ठिदत्तादो ।

(एवं आहारमग्गणा समत्ता)

एवं खेत्ताणिओगद्दारं समत्तं[3] । }

< अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और अयोगिकेवली कितने क्षेत्रमें रहते है? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते है ।। ९१।।

पर्यायार्थिकनयसम्बन्धी क्षेत्रप्ररुपणाकी अपेक्षा उपपादको प्राप्त अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागमें और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है। अनाहारक अयोगिकेवली भगवान, सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवे भागमें और मनुष्यक्षेत्रके संख्यातवें भागमें रहते है।

अनाहारक सयोगिकेवली भगवान कितने क्षेत्रमें रहते है? लोकके असंख्यात बहुभागोमें और सर्वलोकमें रहते है ।।९२।।

प्रतरसमुध्दातगत सयोगिकेवली जिन लोकके असंख्यात बहुभागोमें रहते है, क्योंकि, वे लोकके चारो और स्थित वातवलयके क्षेत्रको छोडकर शेष समान लोकके क्षेत्रको समापूरित करके स्थित होते है। पुन: लोकपूरणसमुध्दातमें वे ही सयोगकेवली जिन सर्व लोकमें रहते है, क्योंकि, उस समय वे सर्व लोकको आपूरण करके स्थित होते है।

(इस प्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई।)

इस प्रकार क्षेत्रानुयोगद्वार समाप्त हुआ। >

{ १. अनाहारकाणां मिथ्यादृष्टिसासदनसम्यग्दृष्टयसंयतसम्यग्दृष्टययोगकेवलिनां सामान्योक्तं क्षेत्रम । सं सि. १, ८.

२. सयोगिकेवलिनां लोकस्यासंख्येयभागा: सर्वलोको वा । स. सि. १,८.

३. क्षेत्रनिर्णय :कृत: । स. सि. १,८. }